



# BHU NEWS

A BI-MONTHLY NEWSLETTER

October-December 2006

BANARAS HINDU UNIVERSITY  
INFORMATION & PUBLIC RELATIONS OFFICE

Vol. 03 No. 5 & 6

## Malaviya was a great visionary: Arjun Singh



Union HRD minister Sri Arjun Singh appreciated the contributions of the founder of BHU, Mahamana Pandit Madan Mohan Malaviya to the field of education describing him as a great visionary. Addressing the inaugural function of the new campus of Banaras Hindu University, he said that this new centre of education has been created to fulfill the dreams of late Rajiv Gandhi to lead the nation on the path of development. Expressing hope that the centre would make its mark at international level, he assured all possible support would be given for the development of the infrastructure of the campus. The University Grants Commission has already given a fund of Rs. Six crore for its development and a sum of Rs. Ten crore would be given soon, he said adding that there would be no hurdles in the development of the campus.

The HRD minister further stated that it was for the people of the area to come forward to develop the region which had been facing the problems of poverty and backwardness.

With the change of time, new challenges were emerging in all fields, and

special attention was needed in the field of education to meet the new challenges, he said adding that the BHU was itself a milestone in the field of higher education.

Addressing the function, Vice-Chancellor of BHU Prof Panjab Singh said that with its job-oriented academic programmes, the new campus would not only promote entrepreneurship development activities, but also provide impetus for better quality of life to the people.

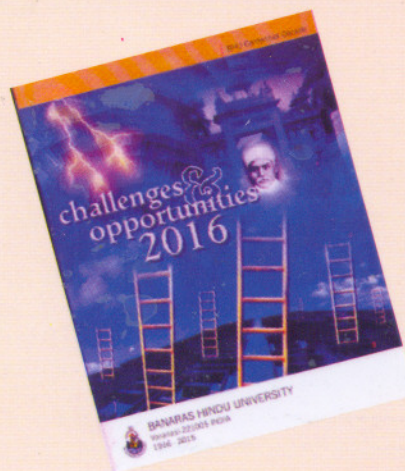
“It is being developed as a potential hub for

education and training for youths and women especially those belonging to the weaker section of the society and living in this marginalised area,” he said.

The Vice-Chancellor said that presently there were 200 students on the campus with seven education programmes. The infrastructure would be developed for the accommodation of 1000 students till the next academic session, he said and added that all types of support from every section of the society would be sought in the development of the campus.

Earlier, the HRD minister laid the foundation stone of administrative block, academic block and hostel. He also released three books Centennial Decade of BHU Challenges 2016. Vision Document of South Campus and Priority Areas of Research and Development on the occasion. Campus Director Prof S R Singh welcomed the guests while BHU Rector Prof S Lele extended the vote of thanks.

Besides a large number of local people, Congress MP from Varanasi Sri Rajesh Mishra, and Congress leader Sri Rajeshpati Tripathi also attended the function.



## सेवा निवृत्त सौ शिक्षकों का शिक्षक दिवस पर सम्मान



सम्मान का पर्याय बन चुके प्रतिष्ठित चिकित्सक इमेरिटस प्रो० टी० के० लाहिडी के सम्मान में स्मृति चिन्ह भी बौना पड़ गया जब सभागार में तालियों की रूँज ने उनके कद का एहसास कराया। मालवीय भवन में यहाँ के पूर्व कुलपति व राष्ट्रपति डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मोत्सव पर 100 सेवानिवृत्त शिक्षकों को सम्मानित किया गया। सम्मान में अंगवस्त्रम्, सम्मानपत्र व स्मृति चिन्ह प्रदान किए गए। मौके पर 1939 से 1948 तक बीएचयू के कुलपति रहे डॉ० राधाकृष्णन के भाषण का अंश भी ऑडियो कैसेट के माध्यम से सुनाया गया।

समारोह में वर्ष 2003-04 में सेवानिवृत्त शिक्षकों को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि गोरखपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो० बी०एम० शुक्ल, अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो० पंजाब सिंह, रेक्टर प्रो० श्रीकान्त लेले ने प्रो० राधाकृष्णन एवं पण्डित मदन मोहन के चित्र एवम् मूर्ति पर माल्यार्पण किया। इस अवसर पर पर वक्ताओं ने कहा कि शिक्षक समाज का पथ प्रदर्शक होता है। गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना संस्कारवान समाज की विशेषता है। शिक्षक किसी भी समाज के संस्कार, चरित्र, संस्कृति और सभ्यता की जीवन रेखा होते हैं। समारोह में कला संकाय के 15, कृषि विज्ञान संस्थान के 10, चिकित्सा विज्ञान संस्थान के 12, आयुर्वेद संकाय के 2, प्रौद्योगिक संस्थान के 26, विज्ञान संकाय के 16, महिला महाविद्यालय की 7, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय के 3, वाणिज्य संकाय, प्रबन्ध शास्त्र संकाय, शिक्षा संकाय, संगीत एवं मंच कला संकाय के एक-एक पूर्व शिक्षकों को



सम्मानित किया गया। वहीं वाणिज्य संकाय ने भी सेवानिवृत्त शिक्षकों के सम्मान में समारोह किया। रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के बीच डॉ० डी०एन०सिंह, डॉ० डी०एस० मिश्र एवं डॉ० के०एन० शर्मा को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय कार्यकारिणी परिषद के सदस्य प्रो० आनन्द मोहन थे। स्वागत संकाय प्रमुख प्रो० प्रकाश श्रीवास्तव ने किया। समाजशास्त्र विभाग में एम०ए० विविध सेमेस्टर के छात्रों ने विभाग के सेवा निवृत्त प्रो० एस०के० श्रीवास्तव एवं विभागाध्यक्ष प्रो० एस० सलीम, प्रो० जयकान्त तिवारी, प्रो० सोहन राम यादव, डॉ० ए०के० जोशी, डॉ० नेहा काला, डॉ० ए०के० कौल को सम्मानित किया। विश्वविद्यालय के डॉ० राधाकृष्णन हास्टल में भी टीचर्स डे का आयोजन हुआ।

सीएचसी पवेलियन पर कला संकाय प्रमुख प्रो० एस०एन० पाण्डेय के नेतृत्व में दर्जनों पौधे रोपित किए गए। पौध रोपण करने वालों में मुख्य रूप से डॉ० एन० बी० शुक्ल, डॉ० अर्चना कुमार, डॉ० बी० एल० त्रिपाठी, संदीप यादव, शान्तु आदि शामिल थे। दूसरी ओर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध सीएचएस ब्याज स्कूल में भी टीचर्स डे मनाया गया। मुख्य अतिथि व स्कूल के पूर्व अध्यापक श्री विजय कुमार ग्वाल को सम्मानित किया गया। स्कूली बच्चों ने सरस्वती वंदना के साथ गीत व कविताओं की प्रस्तुति की। स्वागत स्कूल के प्राचार्य डॉ० एन० के० शाही ने किया जबकि डॉ० राधाकृष्णन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बाबत डॉ० डी० एन० शर्मा ने प्रकाश डाला। धन्यवाद ज्ञापन श्री जयशंकर प्रसाद मिश्र ने किया।

## श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय परिसर में 16 अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। महिला छात्रावासों में सजीव सजीव झाँकियों को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मानो कुछ देर के लिए बीएचयू में ब्रजधाम उतर आया हो। इस अवसर पर महिला महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा श्रीकृष्ण लीला की मनमोहक सजीव झाँकियों की प्रस्तुति की गयी। महिला महाविद्यालय में छात्राओं द्वारा प्रस्तुत शिव दर्शन, द्वारका दरबार, वृन्दावन की होली, ब्रह्म स्तुति, ओखल बन्धन, यमुना तट पर रास, श्रीकृष्ण जन्म, नन्दरानी से कान्हों की शिकायत, कृष्ण राधा दर्शन, नन्दगाँव, अघासुर वध, विरह लीला आदि सजीव झाँकियों को देखकर दर्शक भाव विभोर हो गए। महाविद्यालय में आयोजित झाँकियाँ सुश्री मौसम के निर्देशन में प्रस्तुत



की गयीं। सजीव झाँकियों की सजावट कुमारी प्रीति, तनुश्री कुन्दु ने की। परिसर स्थित त्रिवेणी संकुल के गोदावरी, गंगा, यमुना, सरस्वती, कावेरी महिला छात्रावासों में भी श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर आकर्षक सजीव झाँकियों की प्रस्तुति की गयी। त्रिवेणी संकुल में सजीव झाँकियों में मटकी फोड़, नागनथैया, नटखट कृष्ण, कृष्ण का गीता उपदेश, चौसर, द्रौपदी चीरहरण, श्रीकृष्ण जन्मोत्सव रूक्मिणी विवाह, माखन चोरी आदि कृष्ण लीला की सजीव झाँकियों को देखकर दर्शक मंत्रमुग्ध हो गये। इस अवसर पर छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की मनोहारी प्रस्तुति भी की गयी। वाइसचांसलर प्रोफेसर पंजाब सिंह एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कमला सिंह ने महिला महाविद्यालय, त्रिवेणी संकुल, आई.टी. के डे छात्रावास, विधि संकाय के डाक्टर भीमराव अम्बेडकर छात्रावास तथा रूड़या छात्रावास की झाँकियों की सराहना की।



उनका जीवन ही उनका सन्देश है। वे अपने को सत्यधर्म का प्रयोगी समझते थे, थी आइंस्टीन ने उनके बारे में कहा कि गान्धी ने स्वतन्त्रता के वास्तविक एवं सम्पूर्ण मानवीय पहलुओं को उजागर किया। प्रोफेसर रामाकृष्णन का मत है कि वे आधुनिक अर्थशास्त्र के आलोचक थे तथा नैतिकता को परिवर्तन का आधार मानते थे।

सम्बन्धन में कुलपति प्रोफेसर पंजाब सिंह ने कहा कि गान्धी को सच्ची श्रद्धांजलि कथनी और करनी में एकरूपता लाने से होगी। रेक्टर प्रोफेसर लेले ने समकालीन परिस्थितियों के अनुरूप गांधीवादी मूल्यों को अपनाने की अपील की।

समारोह में छात्र अधिष्ठाता प्रोफेसर वी०के० कुमरा ने अन्नदान योजना में चयनित पन्द्रह छात्रों के नाम की घोषणा की। उन्होंने सभा के अन्त में धन्यवाद ज्ञापित किया। डॉ० उपेन्द्र पाण्डेय ने संचालन किया।

## 137 वीं जयन्ती समारोह

मालवीय भवन में कृतज्ञ विश्वविद्यालय परिवार के सदस्यों ने राष्ट्रपिता महात्मागान्धी को श्रद्धासुमन अर्पित किए। कुलपति प्रोफेसर पंजाब सिंह ने अन्य सदस्यों के साथ मालवीय हेरिटेज परिसर स्थित गांधी प्रार्थना स्थल पर भी फूल चढ़ाए।

मालवीय भवन में आयोजित 137वीं जयन्ती समारोह में "सर्वधर्म प्रार्थना" सभा हुई। गान्धी के प्रिय भजन "वैष्णव जन" तथा "रघुपति राजाराम" का गायन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जाने माने वैज्ञानिक तथा होमी भाभा प्रो० टी०वी० रामाकृष्णन ने पन्द्रह प्रज्ञा चक्र छात्रों को टेपरिकार्ड एवम् कैसेट खरीदने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त वित्तीय सहायता प्रदान की। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि बुद्ध के बाद गान्धी भारत के महानतम लोगों में हैं। उन्होंने बताया कि

# मालवीय वाणी



महामना मदन मोहन मालवीय  
संस्थापक  
(1861-1946)

विद्यालयों में लोकतांत्रिक नागरिकता और नैतिकता तथा धर्म की शिक्षा व्यवस्था हो। विद्यार्थियों में भारतीय राष्ट्रियता की भावना और लोकतंत्र के प्रति निष्ठा पुष्ट की जाय। उन्हें देशप्रेम और नागरिकता की ऐसी शिक्षा दी जाय कि “साम्प्रदायिकता जलमग्न हो जाय।” धर्म के सर्वमान्य नैतिक सिद्धान्तों से विद्यार्थियों को इस तरह परिचित किया जाय कि उनसे अनुप्राणित हो वे अपने चरित्र का गठन कर सकें। अपने जीवन में मानव मात्र के लिए भ्रातृत्व की भावना का विकास कर सकें। सज्जनता विहीन ज्ञान निरर्थक है।

**BHU NEWS**

a magazine of ideas, views & news

*content*

Vol. III • No. V • Oct.-Dec. '06

• Malaviya Vani	03
• From VC's Desk	04
• Marching Ahead	05
• Faculty Honours	09
<b>Inside BHU</b>	
• Direct Basic Research	10
• Fundamental of Geosynthetic Engineering	10
• Inauguration of Training Centre for the self Empowerment of Rural (Distressed) Women	11
• Foundation Stone for Construction of new 132/33 KV sub station laid	14
• Year Long academic interation	19
• Deputation	21
• Appointment	22
• Farewell	23
• Overview of Research	24
• Research perspective	27

FOR LIMITED CIRCULATION ONLY

Edited & Published by **Dr. Vishwanath Pandey**,  
Information & Public Relations Officer &  
Officer on Special Duty (Publication),  
Banaras Hindu University, Varanasi - 221005, INDIA  
**Phone / Fax :** 0542-2368598, 2307260  
**E-mail :** vnp@bhu.ac.in, pandeyvnp@rediffmail.com  
**website :** www.bhu.ac.in

Layout & Graphics : Triloki Nath  
Editorial Assistance & Photo Composing :

**Ram Prasad Singh, V. Misra,  
Deepak Jha and S. Dube**

**Printed at :** Gautam Printers, Varanasi • 9415201718

'News Letter' also available on website [www.bhu.ac.in](http://www.bhu.ac.in)

from the desk of \_\_\_\_\_  
**vice chancellor**



The Prime Minister, Dr. Manmohan Singh while releasing recently 'National Knowledge Commissions Report' to the nation said that the greatest challenge facing India is the challenge of building the capabilities of people. He further emphasized, that "educated, skilled, healthy, empowered people are an asset and need both financial investments, as well as, creative thinking in addressing this challenge. While the government has to find the financial resources, creative thinking must come from all sides".

The Banaras Hindu University has the capacity and resources to be a vehicle of this process in change. In past the objective of its founder, Pt. Madan Mohan Malaviya was to create manpower to rebuild and reconstruct India. Banaras Hindu University has fulfilled this mandate and helped lay down strong infrastructure. However, globalization has paved the need for skilled manpower, entrepreneurship and competitiveness. Knowledge economy is the key to future. Higher education system is also in need of comprehensive reform. The Banaras Hindu University is also approaching its hundred years in 2015. This has given an occasion to retrospect and chalk out vision keeping the future need of India to kept alive torch lighted by great Mahamana.

The efforts made during last 20 months, now bearing fruits and there is no dearth of funds for various schemes initiated. Projects of many crores are in pipelines and on the verge of realization. Likewise, sufficient development funds are available for Rajiv Gandhi South Campus, Barkacha. The Government of India has announced in parliament that project for development of new campus with substantive outlay are under scrutiny as part of 11th five year plan, which will start from next year. Meanwhile, about 10 new courses would be introduced from next session.

The National Knowledge Commission has recommended for the creation of 50 National Universities that can provide education of highest standard. As exemplars of the rest of nation, these universities shall train students in a variety of disciplines including humanities, social sciences, basic sciences, commerce and professional subjects, at both the undergraduate and post graduate levels. It has been further suggested that some of the existing universities could also be converted into national universities, on the basis of rigorous selection criteria, to act as exemplars. There cannot be a better example of a national university than BHU where all the national knowledge commission's criterions in existence as multi disciplinary faculties with all India representations in its teachers and students.

The efforts to pay fellowships to all the research scholars by the university has now seen light of the day and University Grants Commission has agreed to fund fellowships to all Central Universities. Similarly a concept of Students Council being envisaged to promote quality of leadership and inculcate creativity amongst students. The university resolves to support affirmative actions for other backward casts without compromise on 'quality of education'. To this end substantive financial support would be needed for which proposal has been placed before the University Grants Commission.

(Panjab Singh)



**marching ahead**

## RAJIV GANDHI SOUTH CAMPUS



*Vice Chancellor inaugurating Academic Session*

The Banaras Hindu University is renowned in India and around the world as a research intensive and learner-centered institution and for its commitment to open learning, internationalism and collaboration. The University has evolved into a modern institution of higher education, committed to quality programs, and responsive to a rapidly changing world and the aspirations of an increasingly diverse society.

The Banaras Hindu University is perceived and acknowledged as the outstanding public university in the nation. On the basis of this Composite Index Banaras Hindu University is ranked on top among the University systems in the country (PSA Office, New Delhi), spread over an area of 15 sq km this University with its majestic buildings of monumental architectural design, a sprawling campus, lush green fields and canopies of magnificent avenues is testimony to the ingenuity and foresight of its founder Mahamana Madan Mohan Malaviya.

The University has 129 independent teaching departments, many of them recognized as centres of excellence, 15 Faculties, one college Mahila Mahavidyalaya and 3 Institutes - Institute of Technology, Institute of Medical Sciences and Institute of Agricultural Sciences with the unique distinction of having them all in the same campus.

### SOUTH CAMPUS

The South campus (Barkachha), acquired on lease in perpetuity from Bharat Dharma Maha Mandal Trust in April 1979 with an area of 1,119 ha, is situated about 8 km South West of Mirzapur town on Robertsganj highway. Physiographically arid climatically, the campus represents the entire Vindhyan tract, covering parts of UP, MP, Bihar and Chhatisgarh. The river Khajuri flows on the eastern border of the farm. The purpose of acquiring this farm basically was to establish another campus of the university which will provide education, generate and transfer knowledge and technology to the population of the region. Despite, the fact that the region is bestowed with enormous potential for resource conservation and enterprise diversification but no concerted effort was made ever and therefore no tangible progress towards the development of the campus, except locating a Krishi Vigyan Kendra (KVK) of the Indian Council of Agricultural Research (ICAR) could take place, in the year 2004. However, KVK also remained neglected and infrastructure uncared.

**Topography, Soil and Climate:** The climate of Vindhyan region is predominantly dry (subtropical to dry). Winter season is short (December to February) but summer is long (March to November). The temperature rises up to 48° C or more during summer and drops

to 4°C during December-January.

The average annual rainfall of Mirzapur is 1059 mm, of which 90% is received by Southwest monsoon (June-September). The normal period of onset of monsoon in this region is third to fourth week of June, which lasts up to the end of September or sometimes up to the first week of October. Rainfall is highly erratic and unpredictable, at times causing drought spells of varying degrees and durations. It may be emphasized here that this trend of monsoon rains coupled with existing topo-sequence leads to imbalance between rains received and vegetation water demand. The farm area constitutes undulating lands forming a part of Central Vindhyan plateau having gradients up to 16%. About 400 ha of area have soil depth from 45 cm to 03 meters, in which many field crops can be grown without any problem. The remaining land not utilized for infrastructure can be used for development of Biodiversity Park, bio-fuel plantation, fruits, medicinal and forests plants. Major soil series have been identified in the campus area.

- Realizing that the local people have started "loosing their hope, once again after more than two decades, with the vision and efforts of the Vice Chancellor Prof. Panjab Singh taking cognizance of the neglect of the unfulfilled promise, took the challenge to develop the Barkachha farm as "South Campus of BHU". The issue was defined as an Agenda for the "Centennial Challenge 2005-2016". A task force set up for the purpose, developed an ambitious draft plan and a Vision Document for phased development the South Campus to serve as a Centre for



*Moong Crop in field*

education and skill development for the people of this region and meet their long cherished desire.

**VICE-CHANCELLOR'S INITIATIVE MISSION**

- To discover, integrate, articulate, and apply knowledge for the up-liftment of the society.

- To impart education; engage in research; participate in the various community activities, (regional/national) along with organizations, with common interests.

- To provide education and training environment for human resource development.

- To expand knowledge through job oriented and livelihood linked programs.

- To evolve into a modern institution comprehensively with the main Campus, and share the responsibility of enriching cultural tradition, and extending its expertise to individuals, business houses, educational institutions and government departments.

**VISION**

Creating, transmitting and applying knowledge to improve the social, cultural and economic quality of life of people in the region and India. The south campus will be a collaborative, intellectual, multicultural community distinguished by partnerships with existing institutions both public and private, cooperative agreements, which enable students, faculty and staff to cross institutional boundaries for innovative inputs, broadly defined scholarly and creative activities and coordinated community services.

**OBJECTIVES**

- Provide career-oriented Undergraduate and Post Graduate programs with a primary focus on those that are innovative, responsive and need driven.

- Advance the quality of learning, teaching, and professional practice in a technologically favorable environment.

- Contribute to the advancement of region in the national context with particular focus on Vindhyan Region.

- To develop a knowledge and technology dissemination centre for the benefit of rural youth using ICT.

- To establish a model diversified agricultural production centre using natural resources conservation practices.

- Vocational and entrepreneurial courses for self-employment and income generation for livelihood security of youths, especially those of marginalized societies and in the marginal areas.

**PLAN PROPOSAL**

A focused initiative towards develop-

ment of Barkachha Farm has been taken at a rapid pace. Various meetings under the Chairmanship of Vice-Chancellor have been held. Subcommittees constituted for suggesting various activities, program for the campus have proposed the following for Phase I (2005-2010) : Academic Programs

**Postgraduate Courses**

1. M.BA (Agri Business)
2. MSc in Agroforestry
3. M.Sc in Soil & water Conservation
4. M.Ed/M.P.Ed
5. M.Sc in Environmental Sciences

**Undergraduate Courses**

1. B.PEd.
2. B.Ed.
3. B. Pharmacy in Ayurveda
4. B.Tech-Food Technology
5. B.Tech-Architecture
6. B.Tech-Biotechnology

**Diploma / Certificate Courses**

1. Computer Applications
2. Office Management and Company Secretaryship
3. Tourism Management
4. Dairy Technology
5. Counseling and Behavioral Psychology
6. Carpet Technology
7. Catering and Hotel Management
8. Fashion Designing
9. Watershed Management
10. Fisheries Technology
11. Floriculture
12. Food Processing
13. Harvesting Technology

**TRAINING**

- I. Farmer's training
1. Herbal Extraction Training

2. Carpet Designing
3. Rural Craft/Artisans

**II. Agricultural Programs**

1. Cultivation of food and oil seed crops
2. Cultivation of Medicinal, Aromatic and other commercial plants
3. Horticulture and Agro-forestry
4. Seed/Sapling production of Food, Oil seeds. Horticulture and Medicinal plants
5. Dairy Farming and Dairy Technology
6. Fisheries Development
7. Processing and value added product development

**III. Natural Resource and Environment Management**

1. Bio-diversity and Environment Management
2. Preservation and maintenance of indigenous plants of commercial value
3. Natural resource Conservation following watershed management approach

**IV. Infrastructure Development**

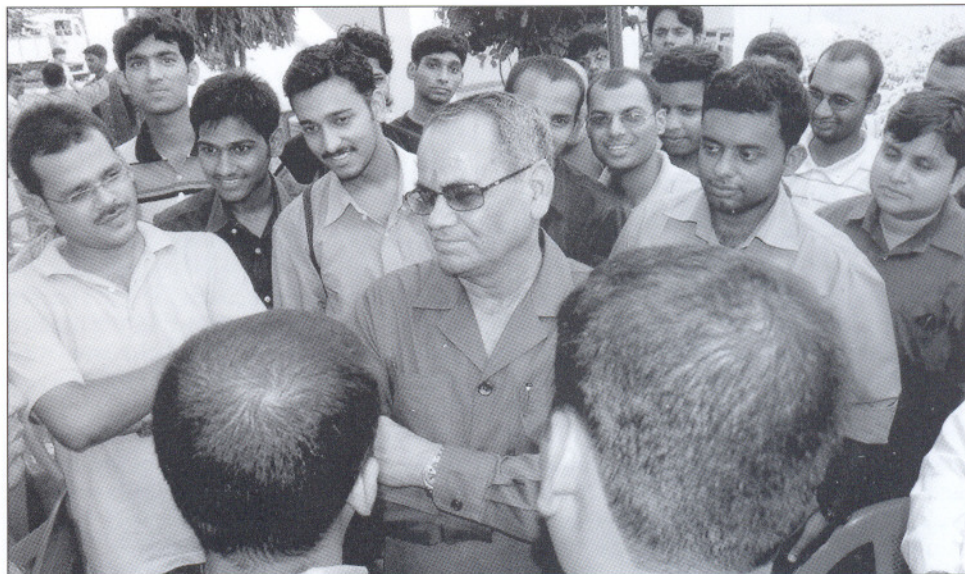
1. Civil construction, i.e., Administrative, Hostel and Laboratory blocks
2. Water and Electric supply
3. Roads and Communication

**V. Knowledge Dissemination**

1. Development of Village Knowledge Centers
2. Transfer of Technology

**VI. Welfare Programs**

1. Health Care Facility
2. Sports and Games
3. Recreational Programs



*Vice Chancellor interacting with students*

The South Campus will be developed in phases with emphasis on the concerted development of the area with advanced quality of teaming, teaching and professional practices linked with livelihood schemes. The campus would provide the facility and an environment for learning through teaching, research and service.

#### Academic Programs

Following courses are in session 2006-07

- 1) Masters in Agri Business and Rural Management (MBA)
  - 2) B. Ed
  - 3) B.PEd
  - 4) B. Pharmacy in Ayurveda
  - 5) Diploma in Computer Applications (PGDCA)
  - 6) Diploma in Office Secretaryship
  - 7) Diploma in Tourism Management
- Academic Programs for the session 2007-08
- 1) M.Sc in Agroforestry
  - 2) M.Sc in Soil & water Conservation
  - 3) M.Sc in Environmental Science
  - 4) B. Tech in Food Technology
  - 5) B. Tech in Architecture
  - 6) Diploma in Dairy technology
  - 7) Diploma in Seed Technology
  - 8) Diploma in Counseling and Behavioral Psychology
  - 8) Diploma in Carpet Technology
  - 9) Diploma in Catering and Hotel Management

**Agricultural Programs** Cultivation of food and oil seed crops Initially about 400 ha of land is being used for cultivation of food grains and Plantation crops, involving scientists of KVK, Coordinated projects and campus farm staff with financial support of the university and ICAR. About 100 ha was planted under food, oilseed and forage crops during 2005. It is planned for 400-500 ha cultivation during 2006. Conduct of Front Line Demonstrations by in-charges of All India coordinated projects (Dry Land, MULLaRP Pigeon-pea, Maize, NSP Cropping System) in 1 ha land each is being undertaken.

Biological fencing for the farm area by trenching and seeding jungle jalebi and leuciana / bamboo is being done at the site to protect it from stray animals and other intruders. The plan is to complete entire farm boundary with three tier live fence.

#### Medicinal, Aromatic and other commercial plants

An initial survey of the area shows a great potential for medicinal and herbal plant



*Health Clinic in Session*

cultivation. The rich heritage of Ayurveda and the knowledge and experience of Faculty of Ayurveda shall be used for large-scale cultivation of medicinal plants/herbs which have immense market potential in the country as well as internationally. The mass cultivation of these herbs will impart job opportunities / business potential to the local inhabitants. Initially, 50 ha is to be put under medicinal plants, natural dyes and other plants of commercial value. Various model farms will be developed for various herbs and medicinal plants.

Bio diesel is another area of interest for development. Various companies and Govt. agencies towards such developmental studies are putting lot of efforts. About 300 ha area would be used exclusively for jatropha cultivation for which the necessary funding for the jatropha cultivation has been provided by the Ministry of Agriculture, Govt. of India.

#### Horticulture and Agro-forestry

The nursery for horticultural plants/trees like Bel, Anoaia, chiraunji, acacia, citrus etc. is being developed. Germ plasm of each plant species will be maintained on 10 ha. The cultivation of these plants has been done through the projects submitted under Horticulture Mission of Govt of India. Plantation of Bamboo/Chiraunzi / Katha, Bel, Aonla etc. would be taken up on priority basis, as these are native of this area and have high

economic value.

Various Post harvest techniques would also be developed at the site. A pilot plant/extraction facility is also to be erected at the site to be used as technology incubation model for various entrepreneurship developments for the adjoining districts. This extraction facility will be sponsored through projects being submitted to DST GOI. Local industrialists may provide financial support for development of natural dyes to be used in carpet industry. A Super-Critical Extractor Plant to demonstrate extraction procedure for products of high commercial value will be set-up at this Farm.

#### Dairy Development

Livestock have been an integral part of Indian agriculture. An integrated project for livestock and dairy development at the site is also being proposed. About two dozen livestock from University pool have been transferred to insure such activities at the farm. This to have a model dairy with 100 milching cows. Several new cattles of good variety may be procured at the campus. This produce will be used to develop an integrated dairy system with production of various products of enhanced market value. This might also enable job opportunities to the people of the region.

#### Seed production

Quality seed production is an important area of agricultural program at south campus. Projects have been submitted and also sanctions received from ICAR, Govt Of India, for the production of cereals, pulses, oilseeds and mushroom spawn.

#### Mushroom spawn production

A mushroom spawn production laboratory for mushroom cultivation has been established with the objective of process optimization and quality product development. Govt. of U.P has provided an initial fund support.

#### Plant propagation through Tissue Culture

An effort is towards development of a Plant tissue culture Laboratory for the micro-propagation of important fruits, ornamental and Medicinal Plants for growers of the Eastern Uttar Pradesh and adjoining states. The Project has been sanctioned by the Ministry of Agriculture, Govt. of India.

#### Farm Laboratories

A Bio-Control lab for HaNPV, Trichogramma and Trichoderma development and subsequent its pilot scale production facility shall be established at the farm site. A project has already been submitted to Ministry of Agriculture for funding.



**NATURAL RESOURCE AND ENVIRONMENT MANAGEMENT**

**Biodiversity Park**

A biodiversity park in an area of 150 ha is proposed to be established to conserve the biodiversity in this Vindhyan region. Biodiversity provides economic benefits in form of food, drugs, dyes, timber, cosmetics, pesticides, medicine and energy. Due to changing environmental conditions of the world about 11,046 species are found critically endangered. Under current scenario, about 20% of all species are found are expected to be lost within 30 year and 50% or more by the end of the 21st century. Thus, endangered species urgently need their conservation. In Vindhyan ecosystems, rapid and ecologically unplanned industrialization, mining activities, establishment of thermal power plants and some crushers etc. have led to environmental degradation problem and heartened the biodiversity. Out of 79 plant species identified in an investigation, 7 species were found very sensitive and were not present on polluted sites. The Biodiversity

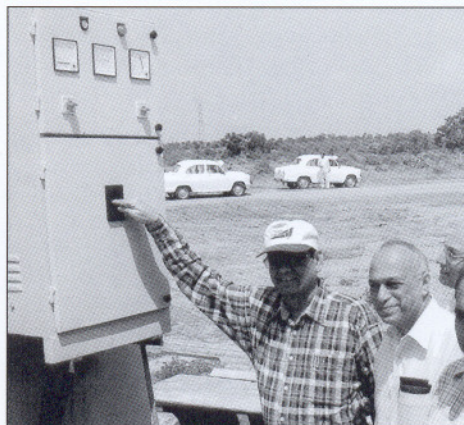
Conservation Park, at South campus will help to conserve the native, rare and threatened plant species of the tropical countries in general and Vindhyan Ecosystems in particular.

This park will be a unique Biodiversity Conservation Park of its own kind in this region, where endangered and threatened terrestrial and aquatic species shall be conserved. A gene bank of ail fruiting trees of

local varieties, threatened and endangered species shall be developed to conserve them in large interest of the world. Two big water bodies have been constructed to conserve the aquatic plant species.

**Water Shed Management**

The water shed management is an integral part of agricultural activities. The area being arid in nature calls for a comprehensive attempt towards water shed management. Various attempts are being put towards development of in-situ water management, conservation of collected water, etc. Several such dams are being constructed on the farm to collect and augment judicious use of harvested water for several activities being conducted at the farm. The semi arid climate and soil conditions prevailing at south campus prompts for an initiative for dry land farming. The entire area is rain fed. Therefore, methodologies involving collection and conservation of rain water attract importance. Efforts are being put towards evaluation and improvement of indigenous methods of moisture conservation and run off management.







faculty honours

• Following members of the Department of Ancient Indian History, Culture and Archeology had visited Beijing, China in order to participate in 6th International Conference on Beginning and Use of Metals & Alloys (BUMA VI) held from 15-20 September 2006.

1. **Prof Vibha Tripathi**, Deputed by Indian National Academy of Engineering, Indian Council of Historical Research, New Delhi

2. **Dr. R N Singh** Deputed by Indian National Academy of Engineering, Indian National Science Academy, New Delhi

3. **Dr. Prabhakar Upadhyay** Deputed by Indian National Academy of Engineering, Indian Council of Historical Research, New Delhi

• **Dr. O. P. Mishra**, Reader & Head, Department of Pediatrics, Institute of Medical Sciences, was honoured as Visting Fellow by INSA-DFG Exchange Scientists Programme for the year 2006. He visited at Division of Pediatric Nephrology, Department of Pediatrics Heidelberg Medical University Centre, Heidelberg, Germany from 15th Sept.2006 to 15 October, 2006. Dr. Mishra had scientific discussion with Prof. Franz Schaefer, Host Scientist, in context to various treatment protocols for cases of nephrotic syndrome in children, newer diagnostic techniques for pediatric obstructive uropathy and follow up plans for renal transplant patients. Dr. Mishra also delivered a guest lecture there on "Controversies in the Management of first episode of nephrotic syndrome.". He has many international research publications related to nephrotic syndrome and has planned to conduct further clinical research trials in these patients.



• **Professor Vidula Jaiswal**, Department of Ancient Indian History, Culture and Archeology has been nominated by the Government of India as member of a working group on Art and Culture for projections and planning for 11th five year plan (2007-12). The committee headed by the Secretary (culture) apart from officials have also consisted of five non official members which include a lone member from university i.e. BHU.

The committee will prepare review reports fro protection, preservation of national heritage and archival management, modification of libraries, and upgradation of national institutions of repute.

• **Mr P R Maiti**, Lecturer, Department of Civil Engineering, IT, has attended the Tenth East Asia-Pacific Conference on Structural Engineering and Construction (EASEC-10) held in Bangkok, Thailand during August 3-5, 2006 and presented a paper entitled "Dynamic Analysis of a Liquid Storage Tank under Sinusoidal Base Excitation". He has also presented another



paper entitled "Dynamic Behaviour of Plate Resting on Elastic Foundation under Harmonic Moving Load" coauthored by Mr. Rohit Saha, a student of B.Tech. Part III, Civil Engg. There were participants from 41 countries and presented 649 papers which is the biggest in the history EASEC.

• **Dr. Suresh Kumar Dubey**, Lecturer Department of Botany, has been conferred with a prestigious BOYSCAST fellowship 2006 of the Department of Science & Technology, Govt. of India, New Delhi. Under this program Dr. Dubey has visited Department of Biological Science, University of Warwick, UK for a tenure of three month from 18 May 06 to 18 August 06. During this period Dr. Dubey had performed collaborative research work specifically on methanotrophic diversity in tropical agroecosystem. Fellow has also visited University of Oxford (Centre for Ecology & Hydrology), University of Cambridge (Department of Microbiology), and Queen Mary's School of Medicine, London and discussed with leading authorities in this field of research.



Academy Award

Dr. Mitali Deb, Lecturer in Sanskrit, Mahila Mahavidyalaya was presented with the Uttar Pradesh Sanskrit Academy Award year 2004 for her literal contribution "Kundaratnavali", in a glittering ceremony held at Parakar Bhavan, Varanasi on 10th September. The award carrying a citation and cash prize of Rs.5000/- was presented to her by Prof A K Kalia, Vice-Chancellor, Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi. Dr. Mitali Deb holds the honour of receiving the Academy award in year 2001 and 2002 also. Recently she has been granted a Major Research Project by UGC on 'Women Empowerment in Pauranic Period'. Last year (2005) she was conferred on the prestigious Maharshi Badrayan Vyas President Award for Sanskrit literature.

'शास्त्र कलानिधि' की उपाधि से सम्मानित

चेन्नई स्थित मद्रास संस्कृत कालेज के शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के इमेरिटस प्रोफेसर (संस्कृत) आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी को उनकी सुदीर्घ साहित्य सेवा व साहित्यशास्त्र के क्षेत्र में अद्वितीय शोधकार्य के लिए "शास्त्र कलानिधि" की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। आचार्य द्विवेदी को उपाधि, मद्रास संस्कृत कालेज परिसर में 30 व 31 जुलाई को आयोजित शताब्दी समारोह के अन्तर्गत दक्षिण भारत के संस्कृत विद्वानों की विशाल विद्वत् सभा में प्रदान की गयी। शताब्दी समारोह में सम्पूर्ण भारत के सम्मानित होने वाले 10 विद्वानों में काशी से आचार्य द्विवेदी अकेले विद्वान थे।

ज्ञातव्य है कि आचार्य द्विवेदी संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय के संकाय प्रमुख तथा साहित्य विभागाध्यक्ष पद पर कार्यरत रहे हैं। आचार्य द्विवेदी के तीन संस्कृत महाकाव्य तथा 15 से अधिक खण्डकाव्य प्रकाशित हो चुके हैं। साहित्यशास्त्र के क्षेत्र में काव्यालङ्कारिका तथा नाट्यशास्त्र के क्षेत्र में पाँच भागों में प्रकाशित नाटयानुशासनम् में आचार्य द्विवेदी ने अनेक मौलिक सिद्धान्तों की स्थापना की है। 1990 में सेवानिवृत्त हुए आचार्य द्विवेदी आज भी साहित्यशास्त्र के प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थों के सम्पादन व प्रकाशन में निरन्तर संलग्न हैं।

बादरायण पुरस्कार से सम्मानित

कला संकाय के संस्कृत विभाग में वरिष्ठ प्रवक्ता डा. शुक्रदेव भोड़ को स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर घोषित किए गए राष्ट्रीय पुरस्कारों के अन्तर्गत संस्कृत भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में किए गए उनके उल्लेखनीय योगदान हेतु एक लाख रूपए के बादरायण पुरस्कार से सम्मानित किये जाने का निर्णय लिया गया है।



उत्कल विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त डा. भोड़ वेद, साहित्य व भाषा विज्ञान के गम्भीर अध्येता हैं। आपने ऋग्वेद के प्रथमोद्दिष्ट पाँच सूक्तों पर सायण एवं दयानन्द के भाष्य का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर एम.फिल. की डिग्री प्राप्त की। पण्डित प्रबोध कुमार मिश्र विरचित मलयदत्त महाकाव्य का समीक्षात्मक अध्ययन आपकी पी.एच.डी. उपाधि के अध्ययन का विषय रहा है। आपने 20 से अधिक राष्ट्रीय एवं एक अन्तराष्ट्रीय गोष्ठियों में भाग लेकर शोधपत्र प्रस्तुत किये हैं।

Visit to Germany

Dr. G N Srivastava, Senior Medical Officer of the Sir Sundar Lal Hospital (Casualty) has presented two papers in the European Respiratory society 16th Annual Congress held on 2-6 September, 2006 in Munich, Germany. He was granted "Bronze Sponsored" scholarship by the organiser of Congress. The paper was on HIV and Drug Resistant tuberculosis, their critical prediction. In his research paper it was observed that unlike developed country, in eastern part of Uttar Pradesh (India), the tubercular present in HIV infected person is pulmonary symptoms rather than Extrapulmonary, which is common in western country. The Pulmonary tuberculosis specially dry resistant and HIV together is a future challenge for chest physician in Easter Uttar Pradesh.

Dr. Srivastava worked his Ph.D. on the topic. Drug resistant Pulmonary tuberculosis in Eastern Uttar Pradesh and co-infection i.e. HIV





## Direct Basic Research

Prof R Chidambaram, delivered lecture on "Directed Basic Research" in the S N Bose Lecture Theatre of the Department of Physics on 8 September. He is well known for his key role in the Atomic Explosion at Pokharan in 1998 and 1974. In his lecture he asked the Scientist to select basic research, in accordance with the needs of the country, to enable development of technology in the next phase of the basic research. As an example he referred to the rural based technology, fast breeder reactor at Kalpakkam and basic hydrogen research and technology being carried out at BHU under the guidance of Prof O N Srivastava, fall in this category. Prof Chidambaram said that instead of In-discriminate running towards the basic research of the developed countries Indian Scientists should direct their attention towards the basic research connected with the problems of the country.

Prof Chidambaram said that extensive work on new basic research e.g. Nanoscience should be done so as to develop technology according to the needs of the nation.

Prof Chidambaram said that Indian Academic and Industries should work together in the sphere of directed basic research. He said that coordination, as above in the field of automatics has already

started. Following this the export of Indian automotive spare parts have also started. He said that in the field of automotive informatics our scientist should immediately start directed basic research. This will boost export and create jobs for younger generation.

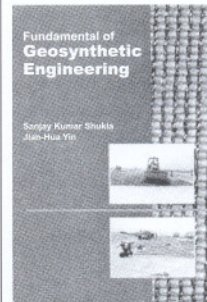
Prof Chidambaram further, pointed out that for speedy development in the area of directed basic research, the handicaps, created by bureaucratic setup have also to be removed as soon as possible. Without this speedy development in directed basic research will not be possible.



Vice Chancellor, Prof Panjab Singh presenting university memento to Prof Chidambaram

In the beginning, Prof O N Srivastava, Convener of the lecture highlighted the contributions of Prof Chidambaram. Vice Chancellor Prof Panjab Singh in his presidential address, said that very soon the faculty of science will be converted into Institute of Science and provide all the scientific equipments and sufficient grants. The Govt. of India, in this direction, has already taken positive steps. Prof Panjab Singh honoured Prof R Chidambaram with the emblems of goddess Saraswati and almighty Lord Ganesh along with Pitambar. The Dean, Faculty of Science, Prof B D Singh and the Head Department of Physics, Prof C P Singh also honoured Prof Chidambaram for his memorable lecture.

## Fundamental of Geosynthetic Engineering



Dr. Sanjay Kumar Shukla, Reader, Dept. of Civil Engineering jointly authored a text book with Dr Jian-Hua Yin "Fundamental of Geosynthetic Engineering" provides an overview of the basic concepts of this fascinating and innovative subject area in a logical and illustrative

way. This book guides the reader from basic description, manufacturing and material properties of the geosynthetics to their selection process and the major applications. It treats practical analysis and design concepts and provides guidelines for application. In addition, the quality control, field performance and monitoring of applied geosynthetics are discussed, and some aspects of costs analysis are described. The text is supported by examples, multiple choice and numerical questions with answers provided. One separate chapter with case studies is included in the book. In addition, the latest common test standards and codes of practice are introduced in a few sections with extensive references.

This textbook will serve courses in geosynthetics or earth reinforcement for graduate students in Geotechnical, Transportation, Hydraulic or Environmental Engineering. It may also be used as part of the undergraduate Geotechnical engineering course for final year undergraduate students in Civil Engineering. The structure of this text also facilitates self-study by civil engineers, manufacturers and installers who wish to become familiar with the subject matter.

## 'Inauguration of Training Centre for the Self Empowerment of Rural (Distressed) Women'



Dr. V. K. Bhatia and Prof. Chandrakala Padia (left) inaugurating the Sewing Training Centre in Amra Village, Varanasi

The inauguration of the training centre for women started with the floral tribute paid to Pt. Madan Mohan Malviyaji and Maan Saraswati and lightning of lamp by the Chief Guest, Mr. V. K. Bhatia, Under Secretary, U.G.C., Mrs. Bhatia, Prof. Chandrakala Padia, Coordinator, Centre for Women's Studies and Development, BHU and other guests present on the dais. Prof. Chandrakala Padia welcomed the guests. She said that the Centre is continuously striving to improve the overall condition of rural population especially female, children in this village. She suggested that we should make them aware regarding the importance of education, their health, their environment etc. She said that without education there is no scope for children whether male or female in future. So they must be educated. She said that the opening of Sewing Training Centre in a village is a step to make rural women economically independent. Mr. V. K. Bhatia, Chief Guest,

in his address suggested that such types of programmes must be encouraged and organised regularly. Women must be made economically independent. He said that economic development of women would help in the development of family, society and of the country. Dr. Sangeeta Kansal,

Reader, Dept. of Community Medicine, gave very informative lecture on 'Health Promotion and Family Planning'. She outlined about the importance of health, how to maintain health especially the mental, physical and emotional changes that take place during adolescent period. It is the responsibility of the mother to make her children aware about the changes that take place during adolescence. Talking about family planning, she said that family planning is a means to keep family happy and healthy. She gave detail knowledge regarding the prevailing methods of family planning. She emphasized that we should be very conscious about our nutritious diet, our environment. She also talked about different Govt. run organisations which help us in different way. On this occasion, mementos were given to special guests. A very informative and interesting Street Play 'Bhagwan Ki Den' was presented by Prerna Kala Manch, Varanasi. Through this play they highlighted the problem of population in India and gave a message that population control can solve many problems in India. Under the Sewing Training Centre five sewing machines were distributed by the Centre. A massive rally on 'Health Awareness' was taken out throughout the village on this occasion in which local people participated at large level along with all the members of CWSD. Dr. Meenakshi Jha, Research Officer extended the vote of thanks. Programme was conducted by Ms. Priyanka Tripathi, Project Fellow. CWSD, BHU.

### Shri Krishna Janmastami Jhankis Awarded

On the auspicious occasion of Shri Krishan Janmastami, celebrated on 16th August, a panel of Judges visited the different Hostels/Schools of the University and inspected the Jhankis arranged by the Hostellers/Schools. As per recommendation of the Judges the following awards were declared:

#### Campus Hostels

1. Swasti Kunj Girls Hostel, (UGGH), MMV & Yamuna Girls Hostel, Triveni Complex
2. New PG Education Hostel, Faculty of Education
3. Ram Kinkar Hostel, Faculty of Visual arts
4. Management Hostel, Faculty of Management Studies & Dr. S C De Hostel, IT

#### Schools

1. Central Hindu Boys School, Kamachha
2. Ranvir Sanskrit Vidyalaya, Kamachha
3. Central Hindu Girls Schools, Kamachha

#### Prize

- | Prize       | Amount     |
|-------------|------------|
| First       | Rs.1000.00 |
| Second      | Rs.750.00  |
| Third       | Rs.500.00  |
| Consolation | Rs.300.00  |

- | Prize  | Amount     |
|--------|------------|
| First  | Rs.1000.00 |
| Second | Rs.750.00  |
| Third  | Rs.500.00  |

## Variety of Rajma Identified

A new variety of Rajma Malviya Smriti (HUR-203), developed by the scientists of Institute of Agricultural sciences in BHU has been given approval in an All India Coordinated Mungbean Urdbean, Lentil Lathyrus, Rajma, Pea (MULLARP) Group Meet held at Mahatma Phule Krishi Vidyapeeth, Rahuri in Maharashtra from September 12 to 14. The plants breeders of genetics and Plant Breeding Department of IAS-BHU, Dr C P Srivastava and Dr. H K Jaiswal along with other fellow scientists have developed this variety. Dr. C P srivastava said that this Rajmash variety out-yielded all the varieties tested in the All India Rajmash Coordinated Varietal Trials.

“The yield potential ranges from 20 to 25 quintal per hectare. The plants are compact and the average plant height of Malviya Smriti is 25 to 30 cm.

It is the earliest Rajma variety maturing in 100 days and the seeds are kidney shaped and are brown coloured with red streak,” claimed Dr. Srivastava, adding “The pod of this variety is non-shattering and seeds do not split in the standing crop.”

## Human dignity lowest

Ms. Asmin Joseph of National University of Juridical Science (Kolkata) said that India was trying to project itself as a state looking forward to claim a place in the league of developed nations.

“Towards this end, India has to a considerable extent substantiate its position politically, as a regional player in Asia said Joseph while delivering a talk on “Practical Issues of Human rights, South Indian Context” at Malaviya Centre For Peace Research.

“It has also placed its claim for permanent membership in the Security Council in the United Nations. To substantiate its claim as a rapidly developed country, India highlights several statistical data like the annual growth rate in which it is second only to China in the region, she added.

“However, if human dignity is to be considered as indicator of development, India probably finds itself placed as one of the worst among the world nations. Human dignity is the quintessence of human rights. However, the quotient of dignity for an average Indian is considered to be very low in comparison with various other developing nations”, she said.

“ Though promises are intact on paper concerning enunciation and protection of Human Rights, there are wide gaps in these promises being fulfilled. The implementation machinery is not only inefficient but also regressive when it comes to the fulfillment of its policies. In fact the law enforcement agencies of

the State is corrupt from top to bottom. The state as a collective of various communities remains indifferent to the practice of discrimination based on birth and gender”, she lamented.

Bijo Francis of South Asian Desk Officer of Asian Human Rights Commission, said that the perceived difference between the theory and practice of Human Rights had always been thought to be divide between the academics and activists. Bringing examples of violation of Human Rights from the real world in Sri Lanka, Nepal and Pakistan, Francis drew the attention of the audience to the gaps in not only the implementation of the human rights regime but lacs the sapces that exist for the voluntary world to make a difference.

Dean of Social Science faculty, Prof P N Pandey presided over the talk whereas Coordinator of Centre, Prof Priyankar Upadhyay, introduced the significance of the subject

## Mismanagement of water causing natural disasters

Eminent Agricultural scientist and Vice-Chancellor Prof Panjab Singh said that mismanagement of water was leading to natural disasters like floods and droughts in several parts of the country every year.

He was delivering the inaugural address of a two day 4th R&D Session of Indian National Committee on Hydrology at K N Udupa auditorium on 24 August. Prof Panjab Singh, also former Director General of Indian Council of Agricultural Research, stressed the need to bridge the gap between research and implementation to ensure adequate drinking water for one and all across the country “We have sufficient water for our use but there is need of proper water management to tap water resources in the best possible manner,” he said.

“Despite having good rainfall ratio, several parts of the country ware facing drinking water crisis.”

Citing examples of Rajasthan, he said that despite having a low rainfall Rajasthan never faced drinking water crisis due to efficient water management. He stressed upon the need of aggressive awareness programmes for water management and its conservation.

Central Water Commission Chairman R Jayaseelan presided over the function and said that there was plenty of water in the country but we lack infrastructure to use it.

He said around 40 per cent water gets lost in distribution in city areas, which was a matter of great concern. He said there was need to reduce this loss of water and evolve effective means and ways to meet the water requirement in the country. Director of National Institute of Hydrology, Dr K D Sharma dwelt upon the R&D session whereas director of Institute of Agricultural Sciences, Prof S R Singh delivered the welcome address.

## W H Auden’s poem predicted WTC attack

W H Auden’s poem titled ‘September 1, 1939 (the day when second world war broke out) was an object of fascination to many Internet users in the days immediately following September 11, 2001 because details of the poem seemed to prophesise the attacks on the World Trade Centre.”

This was stated by Dr. James R Aubrey, Professor of English at Metropolitan State College of Denver (USA) while delivering a lecture on ‘September 1, 1939 and September 11, 2001: An Auden Poem in Retrospect’ on the second day of the two-day international seminar on ‘W H Auden and his contemporary relevance’ organised by the Department of English on 15-16 September.

“Although the resemblances are coincidental, they invite a reexamination of Auden’s poem from the 21st century perspectives. Despite Auden’s personal disdain for his poem other critical views can reveal interesting aspects and fresh insights. A Marxist critic would note that the poem’s reference to skyscrapers dows recognize historical forces that would later lead to capitalism and the global economy,” he said. He said, “A New historian might look at non-literary texts that resonate with the poem; perhaps from the New York papers during the weeks following September 1939. A post-Colonial critic might recognise in lAuden’s question ‘who can speak for the dumb? An anticipation of Gayatri Spivak’s ‘Can the subaltern spak’. A Feminist critic might notice the poem’s single reference to women, and what that suggests.”

“A psychoanalytical critic might attend to the poem’s reference to Freudian theory but might find Auden’s diagnostic powers limited.

A formalist might find numerous ambiguities and binary oppositions, but a Proststructuralist might consider the text a tissue of contradictions leading to a flawed optimism,” said Prof Aubrey, who is also Fulbright visiting lecturer at Guru Ghasidas University (Bilaspur).

Prof Aubrey further added “Jean Baudrillard, dominant voice of Postmodernist criticism, has specifically commented on the events of septmeber 11, 2001, so it is possibel to speculate on what he might say about ‘septemebr 1, 1939’. Others who have commented on Septemebr 11 would have different views and speculation about what those views might be can help all of us better understand Auden’s peoem and ourselves.”

Niranjan Mohanty, Professor of English at Vishva Bharati University (Kolkata) chaired the session whereas Dean of Arts Faculty and also Head of English Department, Prof S N Pandey conducted the programme.

## Orientation programme for foreign students held

An orientation programme for foreign students was organised at the Swatantrata Bhawan on 15 August.

Vice-Chancellor, Prof. Panjab Singh presided over the orientation programme and sought contribution of these students in research and other scientific activities.

Prof Singh also advised the foreign students to learn about Indian Culture, historic significance of Kashi and great character of Mahamana Pt Madan Mohan Malaviya and always be associated with BHU.

On the occasion, the coordinator of International Centre Prof T R Rao said compared to last year 25 per cent more foreign students have been enrolled in BHU in the current academic session of 2006-07.

Prof Rao added that keeping in view the increasing number of foreign students in BHU, an International Centre was established last year to address the problems of these students from a single counter.

Besides, Prof Maheshwari Prasad delivered a lecture on 'Indian Tradition and Culture' whereas Prof U C Dubey dwelt upon 'History of BHU: Vision of Malaviyaji'.

BHU administration also arranged a visit to Buddha temple and Museum in Sarnath area for these students to give them an insight into Indian culture.

Additional Coordinator of International Centre, Prof H B Srivastava conducted the programme and proposed a formal vote of thanks. Rector Prof. S. Lele, Dean of Students, Prof V K Kumra and Prof S K Sharma were among other scholars who addressed these students.

## Stress on knowledge management

Ranbaxy Laboratories Ltd. Vice-President (Global HR) Udai Upendra laid stress on knowledge management in the contemporary business environment.

He was addressing the inaugural function of a national workshop on 'Knowledge Management'. The Faculty of Management Studies and the Management Studies Department of IIT-Roorkee jointly organised the workshop here on 15 October. He said collection of data for information was knowledge.

"Knowledge is required not only to get a job, but also for an individual and an organisation to excel," he said.

ISPAT Industries Ltd. vice-president (Marketing) Rajiv Thakur also outlined the importance of knowledge management. Head of the Management Studies Department at IIT-Roorkee Prof. V K Nangia presided over the workshop and discussed research on knowledge management.

Head of the FMS-BHU Prof H C Chaudhary welcomed the guests. He said the recent management thinking had shifted its focus from external to internal resources of a firm to achieve a sustained competitive advantage. He added that in this new perspective, the capability to manage knowledge was seen as the most significant source of competitive advantage. Almost all the corporates now recognised knowledge management as a long term strategy. He added.

Workshop coordinator Prof P S Tripathi established the theme, while Prof A K Agrawal proposed the vote of thanks.

Later, experts gave lectures on application of knowledge management in the manufacturing, service and government sectors.

## Rural students have enormous talent

Former Vice-Chancellor of Deen Dayal Upadhyay University (Gorakhpur), Prof B M Shukla said there was enormous potential in rural students and the need of the hour was to tap this potential for the development of the country. He was addressing the inaugural function of one month free preparatory coaching camp for students of Jawahar Navodaya Vidyalaya Samiti for Joint Engineering examination 2007 at Institute of technology (IT), in Banaras Hindu University here on 11 October.

A voluntary organisation All India Talent Promotion Campaign has organised this coaching camp from October 9 to November 5. Prof Shukla lauded the efforts of organisation in extending support to poor but talented rural students to get them into mainstream of the society.

Presiding over the inaugural function, the Vice-Chancellor of BHU Prof Panjab Singh promised all sorts of efforts for a smooth conduct of the coaching camp.

Director of IT, BHU, Prof S N Upadhyay also addressed the inaugural function. Secretary of All India Talent Promotion Campaign and an alumni of IT-BHU, Shri Shashank Chaturvedi conducted the programme whereas Dr. Vachaspati Tripathi proposed vote of thanks.

As many as 100 students of Jawahar Navodaya vidyalaya Samiti were selected through a Talent Search Examination from its eight regions to participate in month-long free coaching class for IIT-JEE examination 2007 in BHU.

### List of blind students (2006-07) who have received the 'Teaching Aid' on the occasion of Gandhi Jayanti-2006.

Sl.No.	Name of Students	Class	Faculty	Amount
1	Mr. Rakesh Keshwani	B.A.(Hons)-I	Social Science	Rs.2000/-
2	Mr Santosh Kumar Gupta	B.A.(Hons)-I	Social Science	Rs.2000/-
3	Mr Vibash Dixit	B.A.(Hons)-I	Social Science	Rs.2000/-
4	Mr Rajesh Pandey	B.A.(Hons)-I	Arts	Rs.2000/-
5	Mr Manoj Kumar Pandey	B.A.(Hons)-I	Arts	Rs.2000/-
6	Mr Ganesh Bhartiya	B.A.(Hons)-I	Arts	Rs.2000/-
7	Mr Premjeet Singh	B.A.(Hons)-I	Arts	Rs.2000/-
8	Mr Anup Kumar Roy	B.A.(Hons)-II	Arts	Rs.1000/-
9	Mr Navindra Kumar Pandey	B.A.(Hons)-III	Arts	Rs.1000/-
10	Mr Rajneesh Kumar Dubey	B.A.(Hons)-III	Arts	Rs.1000/-
11	Mr Raj Kumar Singh	B.A.(Hons)-III	Arts	Rs.1000/-
12	Mr Santanu Chaturvedi	B.Mus-I	Performing Arts	Rs.2000/-
13	Ms Ahana Sharma	B.Mus-II	Performing Arts	Rs.2000/-
14	Mr Radhe Shyam	B.Ed.	Education(K)	Rs.2000/-
15	Mr Rajeev Kumar	B.Ed.(Spl)-II	Education(K)	Rs.2000/-

